वसन्त

सूर्य उत्तर मुख हुआ
दक्षिण दिशा को छोड़,
अरुण सारथि ने तभी
ली अश्व-वल्गा मोड़।

दूर कर हिम प्रात का,
कर शीत का अवसान,
दीप्त करके मलयगिरि,
रवि ने किया प्रस्थान।

प्रथम फूले सुमन फिर ये
कोंपलें सुकुमार,
फिर विपिन में छा गया
अलि-वृन्द का गुंजार।

प्रकट पंचम में पिकी का
तब हुआ उल्लास,
शनैः वन-भू में किया
ऋतुराज ने पदन्यास

भ्रमर-दल, अंजन-रचित
पत्रावली का जाल,
तिलक-सुमनों का लगाया,
तिलक अपने भाग।

बाल-रवि रक्तिम सुकोमल
ले रसाल प्रवाल,
माधवी-श्री ने किए,
मानों अधर निज लाल।

-महादेवी वर्मा